ई ई एस एल®

एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज़ लिमिटेड

विद्युत मंत्रालय के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की संयुक्त उद्यम कंपनी

नवोन्मेषी ऊर्जा

2024 की शानदार शुरुआत का जश्न

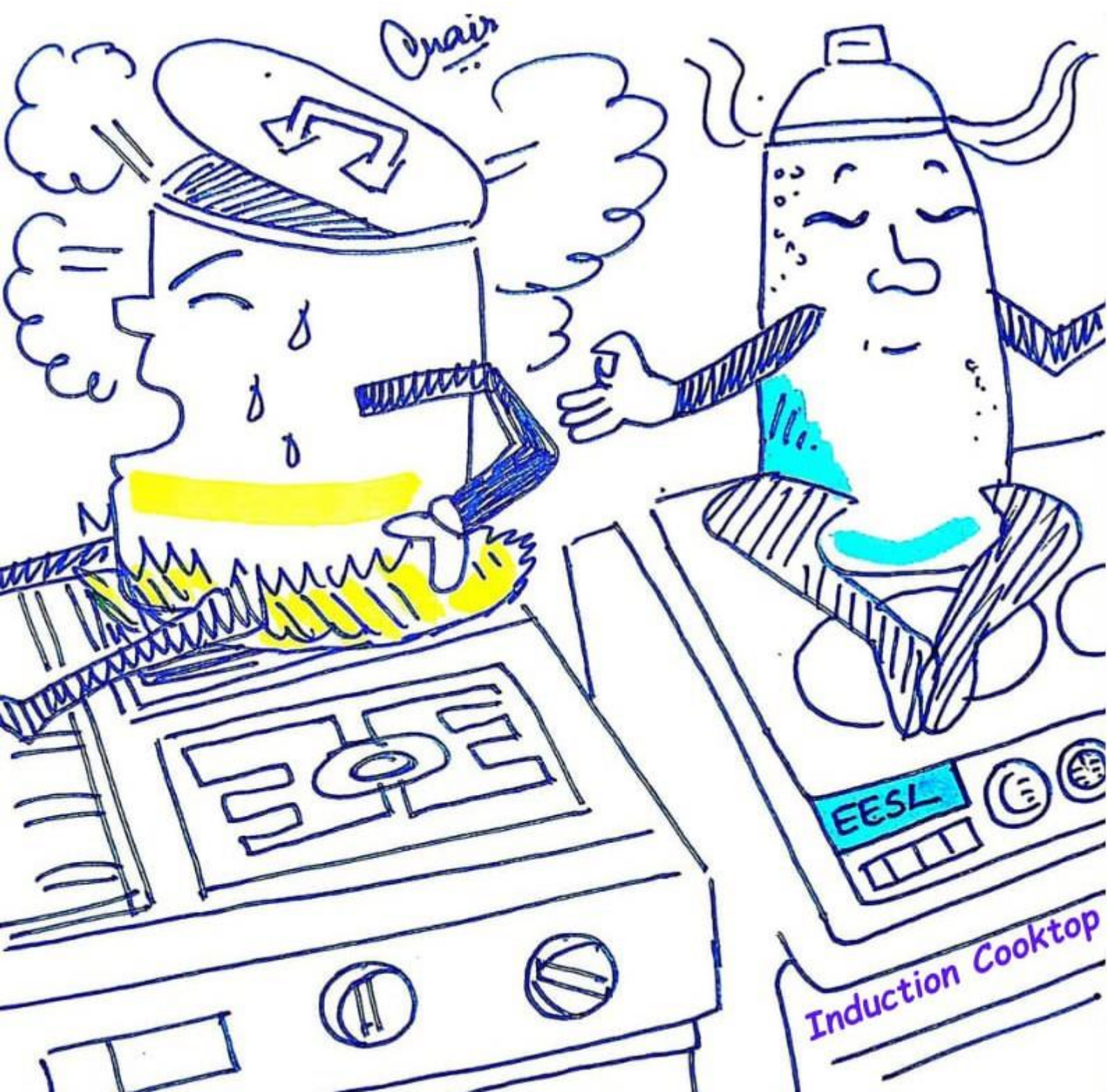

अनुक्रमिका

स्व-प्रेरणा और उद्देश्य: पेशेवर उत्कृष्टता की राह पर चलने की प्रेरणा
श्री विशाल कपूर, सीईओ, ईईएसएल एवं सीईएसएल

संपादक के विचार
श्री नितिन भट्ट, उपमहाप्रबंधक, विक्रय एवं जनसंपर्क, ईईएसएल

जगमगाता भारत : उजाला और एसएलएनपी के 9 साल पूर्ण
श्री अनिमेष मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधक एवं प्रमुख, जनसंपर्क एवं विक्रय, ईईएसएल

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करना: COP28 से सबक
डॉ अजय माथुर, डायरेक्टर जनरल ऑफ द इंटरनेशनल सोलर अलायंस (आईएसए)

लद्दाख : भारत में स्वच्छ खाना पकाने में अग्रणी
श्री विनायक नायर, ऑफिसर-पब्लिक रिलेशन
तस्वीरें-

- ईईएसएल ने लद्दाख में 2000 इंडक्शन कुकस्टॉव्स वितरित करने की घोषणा
- बिहार ईवी कॉन्क्लेव में ईईएसएल ने अपनी अत्याधुनिक ई-मोबिलिटी टेक्नोलॉजी का प्रदर्शन किया

- ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिए, ईईएसएल ने भारतीय रियल एस्टेट डेवलपर्स संघ (क्रेडाई) के साथ एक समझौता किया है। इस समझौते के तहत, दोनों संस्थाएं मिलकर रियल एस्टेट क्षेत्र में ऊर्जा दक्षता के तौर-तरीकों को व्यापक रूप से अपनाने को बढ़ावा देंगी

- ऊर्जा दक्षता और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए, ईईएसएल ने कई संगठनों के साथ समझौते (MoUs) किए हैं। ये समझौते भारत की G20 और COP28 लिए गए वादों के अनुरूप हैं।

भारत और दुनियाभर में ऊर्जा संबंधित उल्लेखनीय रुझान

हमारी टीम

डिजाइन
श्री अनिमेष मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधक एवं प्रमुख, जनसंपर्क एवं विक्रय, ईईएसएल
श्री अक्षय अरोडा, मैनेजर, एडेलमेन इंडिया

संपादक
श्री नितिन भट्ट, उपमहाप्रबंधक, विक्रय एवं जनसंपर्क, ईईएसएल
उप-संपादक
अंजली यादव(अधिकारी, जनसंपर्क)

योगदानकर्ता

प्रियाल (अधिकारी,जनसंपर्क) और श्री विनायक नायर (अधिकारी,जनसंपर्क)

प्रिंट एवं वितरण
क्षितिज नीलम, सहायक जनसंपर्क और मीना वर्मा, सहायक जनसंपर्क

स्व-प्रेरणा और उद्देश्य: पेशेवर उत्कृष्टता की राह पर चलने की प्रेरणा

श्री विशाल कपूर,सीईओ, ईईएसएल

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर तरफ चुनौतियां हैं और सफलता को अक्सर कॉरपोरेट जगत की जटिलताओं से निपटने की क्षमता से आंका जाता है, ऐसे में खुद को प्रेरित रखना बहुत महत्वपूर्ण है। यह पेशेवर उत्कृष्टता की आधारशिला है, जो केरियर की दिशा तय करती है और संस्थानों की सफलता को प्रभावित करती है। दूसरी ओर, जिन संस्थानों में कर्मचारियों को अपने उद्देश्य के बारे में पता होता है, वे व्यवसाय में आने वाले अचानक बदलावों या अप्रत्याशित घटनाओं का सामना करने में अधिक सक्षम होते हैं।

खुद को आगे बढ़ाने की इच्छा और किसी लक्ष्य के साथ काम करना एक छिपी हुई ताकत है जो लोगों को अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देती है। इससे लगातार सुधार होता है और खुद को बेहतरीन बनाने की संस्कृति विकसित होती है। लेकिन अगर ये जुनून न हो तो काम नीरस हो जाता है और मुश्किलों से लड़ने और नई ऊंचाइयों को छूने का जज़्बा नहीं रहता। हर कोई अपने लिए लड़ता है, लेकिन जो लोग अपने मकसद को अपने समुदाय, संगठन या संस्था के मकसद से जोड़ते हैं, वो अक्सर काम और ज़िंदगी में ज़्यादा खुश और सफल होते हैं।

खुद को प्रेरित रखने से कंपनी को बहुत सारे लाभ होते हैं। जब टीम के लोग कुछ अच्छा करना चाहते हैं, तो वे ना सिर्फ खुद की तरक्की करते हैं बल्कि पूरे संगठन को भी आगे बढ़ाते हैं। इससे काम करने का माहौल भी अच्छा बनता है, नए नए विचार आते हैं। साथ ही इस मानसिक अवस्था के साथ मुश्किलों का सामना मजबूती से किया जा सकता है।

खुद को आगे बढ़ाने की प्रेरणा किसी लक्ष्य या मकसद से मिलती है। जब हम अपने निजी और कार्य के लक्ष्यों को किसी बड़े मकसद से जोड़ते हैं, तो हमारे काम करने का जोश और बढ़ जाता है। ये मकसद हमारा रास्ता दिखाता है, हमारे फैसलों को तय करता है और कार्य करने के तरीके को भी बदल देता है। ज़ाहिर सी बात है, जिन लोगों के निजी और काम के लक्ष्य एक जैसे होते हैं, वो ज़ल्दी खुशी और संतुष्टि पा लेते हैं। इसे आप एक तरह का "निर्वाण" भी कह सकते हैं।

जब लोगों को अपने काम में कोई मकसद मिलता है, तो वे ज़्यादा मेहनत और लगन से काम करते हैं। ये जुनून उनकी उत्पादकता बढ़ा देता है, क्योंकि कर्मचारी सिर्फ काम पूरा करने के बजाय, पूरे संगठन के लक्ष्यों में सार्थक योगदान देने लगते हैं। इसका असर सिर्फ व्यक्तिगत प्रदर्शन पर ही नहीं पड़ता, बल्कि पूरी टीम में एकजुटता की भावना और साझा लक्ष्य के लिए मिलकर काम करने का जोश पैदा करता है।

जब कर्मचारी खुद मेहनती हैं और उनकी काम को लेकर एक मकसद है, तो वो आसानी से बदलते हालात के मुताबिक ढल सकते हैं। मुश्किलें और बदलाव आने पर, जोश से भरे कर्मचारी आगे बढ़ने और नई चीजों को सीखने का मौका तलाशते रहते हैं। इससे कंपनियों को बड़ा फायदा होता है, खासकर आज की दुनिया में जहां व्यवसाय का माहौल लगातार बदल रहा है।

प्रेरित होने का फायदा तब दिखता है जब हम ऐसे लोगों को देखते हैं जो अपना काम सिर्फ पैसा कमाने या लेन-देन के लिए नहीं करते हैं। 'लेन-देन (ट्रांजेक्शन)' का मतलब उस नजरिए से जहां लोग नौकरी को सिर्फ तनख्वाह के बदले दी जाने वाली सेवा मानते हैं और उसे अपनी जिंदगी से बिल्कुल अलग रखते हैं। आजकल काम जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गया है क्योंकि लोग अपना बहुत वक्त पेशेवर ज़िंदगी में लगाते हैं। हमारी ज़िंदगी कोई लेन-देन नहीं है, यह हमारी मकसद, उसूलों और प्राथमिकताओं से चलती है, और आखिर में खुशी पाना ही हमारा लक्ष्य होता है। जो नजरिया काम को जिंदगी से अलग रखता है वो काम को हमारे उसूलों, प्राथमिकताओं और मकसद से जोड़ने की अहमियत की उपेक्षा करता है, जिससे आखिर में निराशा और नाखुशी आती है।

ईईएसएल में कई ऐसे लोग हैं जो बहुत मेहनती और समर्पित हैं। उदाहरण के लिए, कुछ लोग इलेक्ट्रिक साइकिल को व्यापार के रूप में बढ़ावा दे रहे हैं, ताकि महिलाओं को सशक्त बनाया जा सके। रितु, चेतना और अक्षिता ने ई-साइकिलों से बाजार में दिलचस्पी पैदा की है, जिससे ईईएसएल और सीईएसएल जैसी संस्थाओं को फायदा हुआ है। इसी तरह, सावित्री सिंह ने दो दक्षिणी राज्यों में बकाया वसूली(रिसीवेबल) की समस्या को हल करने का लक्ष्य रखा है, जबकि तोस ने ईवी सेक्टर के लिए मजबूत आधार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मोहन ने ईवीसीआई सेक्टर में बदलाव लाने के लिए अपने इनोवेटिव बिजनेस मॉडल से सभी को प्रभावित किया है। सेल्स में नितिन और उनकी टीम ने उल्लेखनीय प्रयास किया है और अभिषेक और अवनीश के नेतृत्व में ईई मार्केटप्लेस के क्षेत्र में भी अच्छा काम किया गया है।

जुझारू और मेहनती लोगों को किसी बाहरी दबाव की ज़रूरत नहीं होती, वो अपने मन से काम करते हैं। फिर वो लक्ष्य पूरा हो या न हो, उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं रहता है। ये कुछ-कुछ शेयर बाज़ार को संभालने जैसा है - हर शेयर 18% CAGR से ऊपर नहीं बढ़ता, लेकिन कुछ शेयर 30% या उससे ज़्यादा बढ़ जाते हैं, तो पूरा पोर्टफोलियो अच्छा रहता है. लेकिन ये याद रखना ज़रूरी है कि हर बार 18% CAGR पाना अपने आप नहीं होता, इसके लिए दिल से मेहनत लगती है।

इतिहास ऐसे कई उदाहरणों से भरा है जो हमें बताते हैं कि महान संस्थानों में नेतृत्व ऊपर से नहीं आता। यह हर स्तर पर खुद से प्रेरित लोगों के जरिए आगे बढता है। यही कारण है कि स्वामित्व-आधारित या व्यक्ति-संचालित संस्थान एक निश्चित स्तर से आगे नहीं बढ़ पाते हैं। विकास और उत्कृष्टता के लिए, प्रत्येक व्यक्ति को उस संगठन के उद्देश्य में विश्वास होना चाहिए जिसमें वे काम करते हैं।

अपने आप को आगे बढ़ाने की ताकत (सेल्फ-मोटिवेशन) ही पेशेवर ज़िंदगी की नींव है, जो व्यक्तिगत सफलता और संस्था की खुशहाली को प्रभावित करती है। मेरा मानना है कि इस स्थिति में उद्देश्य का महत्व नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह पेशेवर उत्कृष्टता की राह में सार्थकता को जोड़ता है। जो संस्थाएं और कर्मचारी खुद को आगे बढ़ाने की ताकत और उद्देश्य की संस्कृति बनाते हैं, वो न सिर्फ अपने कर्मचारियों की क्षमता को बढ़ाते हैं बल्कि तेज़ी से बदलते और प्रतिस्पर्धात्मक व्यापार जगत में लगातार सफलता के लिए भी खुद को तैयार करते हैं। हमारे भीतर वो ताकत है, और अगर हम अपने प्रयासों और उद्देश्यों को एक साथ मिला लें, तो एनर्जी एफिशिएंसी के क्षेत्र में ईईएसएल को एक ज़बरदस्त व्यवसायिक ताकत बना सकते हैं।

संपादक के विचार

प्रिय पाठकों,

भारत अपने 75वें गणतंत्र दिवस के साथ वर्ष 2024 के आशाजनक वर्ष में प्रवेश कर रहा है, ऐसे में यह वैश्विक जलवायु कार्रवाई में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए प्रतिबद्धता और उत्साह की एक नई भावना लेकर आया है। हाल ही में संपन्न COP28 ने एक परिवर्तनकारी युग के लिए मंच प्रदान किया है और ईईएसएल के अथक प्रयासों के साथ, हम खुद को सतत भविष्य की ओर एक ऐतिहासिक बदलाव के कगार पर पाते हैं।

इस बदलाव के केंद्र में ऊर्जा दक्षता को एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में स्वीकार करना है। भारत अपने दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ, इस दिशा में अग्रणी पंक्ति में खड़ा है और इसके ऊर्जा दक्षता प्रयासों को वैश्विक मान्यता प्राप्त हो रही है। वहीं ईईएसएल भारत के ऊर्जा परिवर्तन का नेतृत्व करते हुए, इस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में बिजली की तीव्रता(पॉवर इंटेसिटी) और कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में उल्लेखनीय सफलता का गवाह बन रहा है।

हमारी कई परियोजनाएँ प्रमाणित हैं कि कैसे सही रणनीतियों से बड़े पैमाने पर ऊर्जा बचाने वाले उपकरणों को अपनाया जा सकता है। खासकर हमारे नए प्रयास, जैसे कि 1 करोड़ ऊर्जा-दक्ष बीएलडीसी पंखों, 2 लाख इमरजेंसी/इन्वर्टर एलईडी बल्बों और 20 लाख इंडक्शन कुकरों का वितरण, यह दर्शाता है कि हम ऊर्जा दक्षता को दोगुना करने और देश की कार्बन उत्सर्जन को घटाने के लक्ष्य में कितना योगदान दे रहे हैं।

वर्ष '2024 की शानदार शुरुआत का जश्न' शीर्षक वाले हमारे न्यूजलेटर का यह संस्करण इस महत्वपूर्ण वर्ष के महत्व को दर्शाता है. यह विशेष रूप से नवीन हरित समाधानों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, क्योंकि हमारी ऊर्जा चुनौतियां तेजी से जटिल होती जा रही हैं. हमें ईईएसएल द्वारा उठाए गए कदमों को प्रदर्शित करने पर गर्व है, जिससे ऊर्जा दक्षता को केवल एक चर्चित शब्द नहीं बल्कि एक व्यापक, सुलभ और किफायती वास्तविकता बनाया जा सके।

'जगमगाता भारत : उजाला और एसएलएनपी के 9 साल पूरे' लेख में, हम ईईएसएल की प्रमुख पहलों के शानदार सफर को फिर से देखते हैं। हम पूरे देश में उजाला और एसएलएनपी के प्रभाव का गहराई से अध्ययन करते हैं और भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यह लेख इस बात पर भी गहराई से विचार करता है कि हम कैसे रणनीतिक रूप से 9W से 6W के एलईडी बल्बों की ओर बदलाव कर रहे हैं, एलईडी इन्वर्टर बल्बों को अपनाने की वकालत कर रहे हैं और पूरे देश में बीएलडीसी पंखों के व्यापक उपयोग को बढ़ावा दे रहे हैं।

यह लेख "ऊर्जा दक्षता और इंडक्शन कूकिंग की जोड़ी हर घर को जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मदद करेगी" इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे हम कम बिजली खर्च करने वाले इंडक्शन चूल्हे अपनाकर जलवायु परिवर्तन से लड़ाई में योगदान दे सकते हैं। सरकारी संस्था ईईएसएल 20 लाख ऐसे चूल्हे लगाने जा रही है, जो बाजार में मिलने वाले चूल्हों से 25-30% कम बिजली खर्च करेंगे और साथ ही खाना पकाने का तरीका भी बदल देंगे।

हम 'जलवायु परिवर्तन के असर को कम करना: COP28 से सबक' लेख में COP28 से मिले महत्वपूर्ण सबक को भी देखते हैं। यह शिखर सम्मेलन वादों को ठोस कार्यों में बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में कार्य करता है। हालांकि इस दिशा में प्रगति हुई है, लेकिन अब निरंतरता की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है, जोकि जलवायु संकट से निपटने की गंभीरता को रेखांकित करती है।

जैसा कि हम 2024 की इस शानदार शुरुआत पर निकले हैं, आइए अब तक की उपलब्धियों, सामना की गई चुनौतियों और आने वाले नवीन समाधानों का जश्न मनाएं। साथ मिलकर, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक पर्यावरण अनुकूल और कुशल ऊर्जा परिदृश्य बना रहे हैं।

नितिन भट्ट

उप महाप्रबंधक, विक्रय एवं जनसंपर्क, ईईएसएल

'जगमगाता भारत: उजाला और एसएलएनपी के 9 साल पूर्ण'

श्री अनिमेष मिश्रा, मुख्य महाप्रबंधक, जनसंपर्क एवं विक्रय, ईईएसएल

भारत अपना 75वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। इस मौके पर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत को विकसित बनाने का सपना देखा है। उन्होंने बताया कि इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए नई खोज और नई तकनीक का सृजन को और पर्यावरण का ख्याल रखना (सस्टेनेबिलिटी) बहुत जरूरी है।

बिजली बचाने के मामले में, पिछले नौ सालों में दो चीजें बहुत अहम साबित हुई हैं - कम बिजली खर्च करने वाले साधन और हर किसी को इनका इस्तेमाल करने का अवसर देना। इसका एक बेहतरीन उदाहरण 'उजाला योजना' है, जिसे दस साल पहले 5 जनवरी 2014 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने शुरू किया था। देशभर में चलने वाले इस रोशनी कार्यक्रम का मकसद घरों में इस्तेमाल होने वाले पुराने और ज्यादा बिजली खपत करने वाले बल्बों, ट्यूबलाइट्स और पंखों को एलईडी बल्ब, एलईडी ट्यूबलाइट्स और कम बिजली खर्च करने वाले पंखों से बदलना है। इसी के साथ, 'स्ट्रीट लाइट नेशनल प्रोग्राम (एसएलएनपी)' भी शुरू किया गया, जिसका मकसद सड़कों पर लगी पुरानी स्ट्रीटलाइट्स को स्मार्ट और कम बिजली खर्च करने वाली एलईडी लाइट्स से बदलना था। इन दोनों कार्यक्रमों की पिछले नौ सालों में बड़ी सफलता ने भारत को दुनिया में एलईडी की मांग बढ़ाने में सबसे आगे खड़ा कर दिया है।

भारत सरकार की उजाला योजना ने आम लोगों को बड़े पैमाने पर सस्ती एलईडी बल्ब उपलब्ध करा के देश में ऊर्जा बचाने में अहम भूमिका निभाई है। इस योजना की वजह से एकसाथ थोक में बल्ब खरीदा गया, जिससे इसकी कीमत कम हो गई और बाजार में एलईडी को बढ़ावा मिला। पिछले 9 सालों में भारत में जितने एलईडी बल्ब बिके, उनमें से ज्यादातर का श्रेय उजाला योजना को ही जाता है। इसकी शुरुआत वर्ष 2014 में हुई थी, जब विद्युत मंत्रालय ने ऊर्जा दक्षता बढ़ाने के लिए एलईडी के इस्तेमाल को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखा था। उस समय LED बल्ब की कीमत साधारण सीएफएल बल्बों (₹100-150) और सामान्य रोशनी देने वाले बल्बों (₹10-15) से 3 से 5 गुना ज़्यादा हुआ करती थी।। उजाला योजना ने इसी चुनौती को पार किया और आज भारत में हर घर तक सस्ती एलईडी पहुंचा रही है।

कंपनी ने एक नया 'पे एज यू सेव' बिजनेस मॉडल बनाया, जिसके तहत घरों को केवल ₹10 में LED बल्ब उपलब्ध कराए गए। नगर निगमों के खर्च के बिना ही, एसएलएनपी के तहत पुरानी स्ट्रीटलाइट्स को ईईएसएल द्वारा एलईडी लाइट्स से बदल दिया गया। इससे बचत होने वाली बिजली और रख-रखाव के खर्च से कंपनी को धीरे-धीरे भुगतान कर दिया जाता है। अब तक, पूरे भारत के शहरी निकायों और ग्राम पंचायतों में 1.30 करोड़ से अधिक एलईडी स्ट्रीटलाइट लगाए गए हैं। इससे हर साल अनुमानित 8.75 बिलियन किलोवाट बिजली की बचत हुई है, जिससे 1,459 मेगावाट की चरम बिजली की मांग कैम हुई है। साथ ही हर साल 6.03 मिलियन टन CO2 गैस उत्सर्जन कम हुआ है और नगर पालिकाओं के बिजली बिलों में लगभग 6,128 करोड़ रुपये की बचत हुई है। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में कुशल प्रकाश व्यवस्था को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, ईईएसएल ग्राम पंचायतों में भी नगर पालिकाओं के लिए SLNP जैसी ही सेवा मॉडल पर LED स्ट्रीट लाइटिंग परियोजनाओं को लागू कर रहा है। अब तक, आंध्र प्रदेश, झारखंड और तेलंगाना के ग्रामीण क्षेत्रों में 28 लाख से अधिक एलईडी स्ट्रीटलाइट लगाए जा चुके हैं।

ईईएसएल ने एलईडी बल्ब, बीएलडीसी पंखे और इंडक्शन चूल्हे बेचने के लिए टेंडर जारी किया है, ताकि पूरे देश में हर जगह ऊर्जा बचाने वाले उपकरण आसानी से मिल सकें। अभी तक ऊर्जा दक्ष पंखा कार्यक्रम के तहत 57,000 से ज्यादा बीएलडीसी पंखों को बेचा जा चुका है और ईईएसएल का लक्ष्य है कि 1 करोड़ बीएलडीसी पंखे बेचे जाएं। इससे हर साल लगभग 14 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड कम होगा, 225 मेगावाट बिजली बचेगी और करीब 1046 करोड़ रुपये बचेंगे। इसके अलावा, राष्ट्रीय ऊर्जा और जलवायु योजना (एनईसीपी) के तहत दिसंबर 2023 से मार्च 2027 तक 20 लाख इंडक्शन चूल्हे बेचे जाएंगे।

गैस चूल्हे के मुकाबले, इंडक्शन चूल्हे 80% से 90% ज्यादा कुशल हैं और इनके इस्तेमाल से हर साल लगभग 802 यूनिट प्रति इंडक्शन बिजली की बचत होगी। ईईएसएल के कार्यक्रम लोगों की जिंदगी में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं, खासकर उजाला और एसएनएलपी योजनाएं इसका जीता जागता प्रभाव है।इसी क्रम में आगे बढ़ते हुए, कंपनी 9 वाट के एलईडी बल्बों से रणनीतिक रूप से 6 वाट के एलईडी बल्बों की ओर बढ़ने की योजना बना रही है और साथ ही 40,000 एलईडी इन्वर्टर बल्बों (बिजली कटौती के दौरान चार घंटे तक का बैकअप देने वाले) को अपनाने को बढ़ावा दे रही है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करना: COP28 से सबक

डॉ अजय माथुर, डायरेक्टर जनरल ऑफ द इंटरनेशनल सोलर एलायंस(आईएसए)

दुनिया भर में प्रदूषण बढ़ने की रफ्तार बहुत चिंताजनक है। अगर ऐसा ही चलता रहा, तो इसमें 2050 तक सिर्फ 4% ही कमी आएगी। इससे भयानक परिणाम हो सकते हैं, इसलिए हमें इसे रोकने के लिए ज़रूरी कदम उठाने होंगे, वरना बहुत देर हो जाएगी।

हाल ही में समाप्त हुआ COP28 बैठक बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ है। इसने हमें जलवायु संकट से निपटने के लिए जरूरी नसीहतों के बारे में बताया है। पिछले कुछ दशकों में तापमान में भारी बदलाव, समुद्र तल का बढ़ना और प्राकृतिक आपदाओं में पांच गुना वृद्धि होना अब दिखने लगा है, जिससे बहुत आर्थिक नुकसान हुआ है। COP28 ने हमें नवीकरणीय ऊर्जा की ओर रुख करने की जरूरत पर जोर दिया है। इस सम्मेलन में नवीकरणीय ऊर्जा को तीन गुना बढ़ाने और ऊर्जा दक्षता को दोगुना करने का आह्वान किया गया है। COP28 और जी20 के नई दिल्ली नेताओं के घोषणा पत्र में इस ज़रूरी काम को करने की बात दोहराई गई है। ये लक्ष्य न सिर्फ मिलकर ज़्यादा काम करने की प्रेरणा देते हैं, बल्कि ये सबसे गरीब और कमज़ोर लोगों की भलाई का ख्याल रखने की ज़रूरत को भी रेखांकित करते हैं। कम कार्बन उत्सर्जन के लक्ष्य को पाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को तीन गुना और ऊर्जा की बचत को दोगुना करना ज़रूरी है।

अब जबकि दुनिया COP28 के नतीजों पर गौर कर रही है, तो ये साफ है कि जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए मिलकर बड़े कदम उठाए जा रहे हैं। पूरे विश्व में ऊर्जा बचाने की बातें अब पहले से ज्यादा हो रही हैं, ये इस बात का संकेत है कि हर कोई समझ चुका है कि ऊर्जा बचाने से कितना फायदा हो सकता है। इसलिए सभी देश मिलकर ऊर्जा बचाने का प्रयास कर रहे हैं। अब ये साफ़ हो गया है कि पर्यावरण को बचाने के लिए हर किसी को अपनी ज़िम्मेदारी निभानी है और पर्यावरण अनुकूल आदतें अपनानी हैं। साथ ही, सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे साधनों का इस्तेमाल तेज़ी से बढ़ रहा है, जिससे ये उम्मीद जगी है कि 2030 तक हम इनका इस्तेमाल तीन गुना कर सकते हैं।ये न सिर्फ मुमकिन है, बल्कि हमारे बेहतर भविष्य के लिए भी ज़रूरी है। सूर्य से मिलने वाली ऊर्जा, जिसे 2030 तक स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्य प्राप्त करने में महत्वपूर्ण माना गया है, उस पर खास ध्यान दिया जा रहा है। इंटरनेशनल सोलर अलायंस (ISA) अपने सदस्य देशों को समर्थन देने की प्रतिबद्धता के अनुरूप, स्वच्छ ऊर्जा निवेश में भारी वृद्धि की वकालत करता है, जिसका लक्ष्य 2030 तक वर्तमान स्तर को तीन गुना करना है। COP28 में ISA द्वारा ग्लोबल सोलर फैसिलिटी (GSF) की घोषणा एक ऐतिहासिक पहल है, जो पूरे अफ्रीका में सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए व्यावसायिक पूंजी के द्वार खोलने के लिए तैयार है। इसमें ग्रिड से दूर, छत पर और उत्पादक उपयोग वाले सौर संयंत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

जीएसएफ का लक्ष्य 100 मिलियन डॉलर जुटाना है। इसका उद्देश्य निवेश बढ़ाकर और निवेश के जोखिमों को दूर करके अफ्रीका में सौर ऊर्जा को तेजी से बढ़ावा देना है, जिससे वहां सौर ऊर्जा की अपार संभावना को भुनाया जा सके। भारत सरकार, ब्लूमबर्ग फिलेनथ्रोफिज, सीआईएफएफ और स्वयं आईएसए का समर्थन सतत ऊर्जा समाधान को बढ़ावा देने के लिए एकजुट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।मौसम परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए किए जा रहे वैश्विक प्रयासों में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि 'घाटा और क्षति कोष' की स्थापना है। यह एक ऐतिहासिक समझौता है जिसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से जूझ रहे कमजोर विकासशील देशों को सहायता प्रदान करना है। हालाँकि शुरुआत में अच्छी धनराशि देने का वादा किया गया है, लेकिन जलवायु से जुड़े प्रभावों के कारण विकासशील देशों को हर साल होने वाले लगभग 400 अरब डॉलर के नुकसान से निपटने के लिए और अधिक सहायता की आवश्यकता है, इस बात को लगभग सभी मानते हैं।

दुनिया कई मुश्किलों का सामना कर रही है, ऐसे में स्वच्छ ऊर्जा को तेजी से अपनाना और सभी को समान रूप से इसका लाभ पहुंचाना बहुत ज़रूरी है। जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में तेज़ी से आगे बढ़ते हुए, आइए हम स्वच्छ ऊर्जा समाधानों से चलने वाली एक अधिक पर्यावरण अनुकूल और समान दुनिया बनाने के लिए फिर से प्रतिबद्ध हो जाएं।

लद्दाख: भारत में स्वच्छ खाना पकाने में अग्रणी

श्री विनायक नायर, अधिकारी, जनसंपर्क

इंडक्शन आधारित चूल्हे पारंपरिक खाना पकाने के तरीकों से 25-30% तक सस्ते हैं।

जलवायु परिवर्तन से लड़ने के प्रयासों में जैसे-जैसे दुनियाभर में उत्सर्जन कम करने पर जोर दिया जा रहा है, वैसे ही ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना बहुत जरूरी हो गया है। इस महत्वपूर्ण समय में धरती को बचाने के लिए दुनियाभर की सरकारों और नागरिकों को मिलकर ऊर्जा बचाने और सतत विकास को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता जतानी होगी।

एनर्जी एफिशिएंसी सर्विस लिमिटेड (EESL) ने हाल ही में लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, चाइल्ड केयर सेंटरों और मठों को 2000 इंडक्शन कुकटॉप बांटने की घोषणा की है। इसके अलावा, ईईएसएल पूरे लद्दाख में घरेलू उपयोग के लिए सोलर लालटेन और इंडक्शन कुकटॉप बांट रहा है, जिससे यह वैश्विक स्तर पर ऐसा पहला प्रयास करने वाला केंद्र शासित प्रदेश बन गया है। यह परियोजना ईईएसएल के नेशनल एफिशिएंट कूकिंग प्रोग्राम (NECP) के तहत आती है, जिसे केंद्रीय ऊर्जा, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री आर.के. सिंह जी ने 2 नवंबर, 2023 को शुभारंभ किया था। इंडक्शन कुकटॉप का वितरण लद्दाख पावर डेवलपमेंट डिपार्टमेंट (LAPDD), मॉडर्न एनर्जी कुकिंग सर्विसेज (MECS) और ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) द्वारा प्रदान किए गए फंड के सहयोग से किया जा रहा है। इसका उद्देश्य ऊर्जा-कुशल, स्वच्छ और सुरक्षित खाना पकाने को बढ़ावा देना है।

आधुनिक तकनीक, तेजी से बढ़ती रसोई गैस की कीमतें और घर से काम करने वाली महिलाओं,प्रदर्शन और कम बिजली खपत की वजह से इंडक्शन कुकटॉप बाजार में काफी तेजी आई है। वर्ष 2021-22 में ही 1 करोड़ से ज्यादा इंडक्शन कुकटॉप इस्तेमाल होने लगे थे। मॉड्यूलर किचन का चलन, की संख्या बढ़ने जैसे कारणों ने इसकी लोकप्रियता बढ़ाई है। भारतीय पकवानों को बनाने में भी इंडक्शन कुकटॉप काफी काम आता है। अनुमान लगाया जा रहा है कि आने वाले वर्षों में इस बाजार की रफ्तार 12% सालाना की दर से बढ़ेगी। अभी तक उत्तर और पश्चिम भारत में इनका इस्तेमाल ज्यादा है, लेकिन अब जागरूकता बढ़ने और जीवन स्तर सुधरने से दूसरे इलाकों में भी तेजी से अपनाया जा रहा है। पूरी दुनिया में वर्ष 2020 में इस बाजार की कीमत 18,667.8 करोड़ अमेरिकी डॉलर थी और अनुमान है कि साल 2028 तक ये 8.5% सालाना की रफ्तार से बढ़ेगा। रसोई, दफ्तर और रेस्टोरेंट्स में इस्तेमाल के साथ-साथ बढ़ती ईंधन की कीमतों और मॉड्यूलर किचन के चलन से भी इसके बाजार को बल मिल रहा है।

ईईएसएल की ओर से शुरू की गई NECP का लक्ष्य भारत में खाना पकाने के तरीके में क्रांति लाना है। यह ऊर्जा बचाने वाले और किफायती खाना पकाने के तरीके प्रदान करेगा। आने वाले सालों में पूरे भारत में 20 लाख इंडक्शन कुकर लगाकर ईईएसएल खाना पकाने के तरीकों से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण को कम करना चाहता है, जिससे हवा साफ होगी और लोगों का स्वास्थ्य बेहतर होगा। इस पहल से हर इंडक्शन कुकर पर लगभग 802 यूनिट ऊर्जा बचने की उम्मीद है, जिससे पारंपरिक तरीकों से खाना पकाने के मुकाबले सालाना करीब 5,000 रुपये की बचत होगी। गैस स्टोव के मुकाबले 80-90% तक ज्यादा कुशल होने के कारण इंडक्शन कुकरों से भारतीय रसोई में आधुनिक बिजली से चलने वाले खाना पकाने के उपकरणों को अपनाने में तेजी आने की उम्मीद है।

नवगठित केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख, अपनी समृद्ध संस्कृति और भौगोलिक जटिलताओं के साथ, खाना पकाने के स्वच्छ तरीके के साथ ऊर्जा-कुशल उपायों को अपनाने में भारत का नेतृत्व करने के लिए तैयार है। क्षेत्र की अनूठी स्थलीय और पर्यावरणीय परिस्थितियों को देखते हुए, लद्दाख के आंगनबाड़ी केंद्रों और महिलाओं के लिए इंडक्शन कुकर महत्वपूर्ण हैं। ईईएसएल के इंडक्शन कुकर अपनी दक्षता और तेजी से खाना गर्म करने के लिए जाने जाते हैं, जिससे लद्दाख की कठोर जलवायु में समय और ऊर्जा की बचत होती है, जहां ऊर्जा संसाधन दुर्लभ और महंगे हैं।

ईईएसएल द्वारा बनाए गए ये इंडक्शन चूल्हे बिना आग के चलते हैं, जिससे आग लगने और गैस सिलेंडर धमाके का खतरा कम हो जाता है, जो लद्दाख के कठिन वातावरण में बहुत जरूरी है। इसके अलावा, ये हानिकारक धुआं नहीं छोड़ते, जिससे पारंपरिक जलावन (लकड़ी या गोबर) से होने वाले स्वास्थ्य और पर्यावरण संबंधी चिंताओं का समाधान होता है। ईईएसएल के इंडक्शन चूल्हे लकड़ी या गोबर जैसे जलावन ईंधन पर निर्भरता कम करके वनों की कटाई को रोकने और मिट्टी के संरक्षण में योगदान देते हैं।

नेशनल प्रोग्राम-प्रभाव प्रमुख (एनईसीपी) श्री नितिन भट्ट इंडक्शन कुकिंग के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि यह सिर्फ टेक्नोलॉजी में बदलाव नहीं, बल्कि इससे कहीं ज्यादा है। वह कहते हैं, "एनईसीपी द्वारा समर्थित इंडक्शन कुकिंग खाने पकाने के क्षेत्र में क्रांति है और सतत, ऊर्जा-बचत भविष्य की ओर एक बड़ा कदम है।" ईईएसएल के नए डिजाइन किए गए इंडक्शन कुकटॉप के साथ हम खाने-पीने की दुनिया में बड़ा बदलाव ला सकते हैं और साथ ही ऊर्जा बचाने में भी मदद कर सकते

इन फायदों के अलावा, इंडक्शन चूल्हे महिलाओं को सशक्त बनाते हैं क्योंकि इससे खाना पकाने में लगने वाला समय और मेहनत कम हो जाती है। इससे महिलाओं को शिक्षा, काम या अन्य उत्पादक गतिविधियों के लिए ज्यादा समय मिलता है। इससे वे स्वतंत्र रूप से कमाने वाली बन पाती हैं।

लद्दाख जैसा एक अप्रयुक्त क्षेत्र, जो विकास के साथ पारिस्थितिकीय संरक्षण को संतुलित करने की क्षमता रखता है, यदि ऊर्जा दक्षता का चैंपियन बन सकता है, तो अन्य राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को भी बिजली संरक्षण और संसाधनपूर्ण ऊर्जा उपयोग को अपनाना चाहिए। लद्दाख सौर ऊर्जा दोहन, पवन ऊर्जा, हिमालयी नदियों से जलविद्युत, समुदाय-आधारित ऊर्जा पहल, इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी प्रौद्योगिकी और बायोगैस संयंत्रों में अपने अवसरों का लाभ उठाकर उत्पादक, ऊर्जा-कुशल गतिविधियों को लागू कर सकता है।

यही रणनीतियां अपनाकर लद्दाख न सिर्फ अपनी ऊर्जा जरूरतों को पर्यावरण अनुकूल तरीके से पूरा कर सकता है, बल्कि पूरे भारत के लिए एक मिसाल भी बन सकता है। ऊर्जा दक्षता उपायों को आगे बढ़ाने में लद्दाख की सफलता पूरे देश में ऐसी ही पहलों को प्रेरित कर सकती है, जिससे भारत के सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण के व्यापक लक्ष्यों में योगदान दे सकता है।

ईईएसल ने लद्दाख में 2000 इंडक्शन कुकस्टॉव्स वितरित करने की घोषणा की है

बिहार ईवी कॉन्क्लेव में ईईएसएल ने अपनी अत्याधुनिक ई-मोबिलिटी टेक्नोलॉजी का प्रदर्शन किया

ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिए, ईईएसएल ने भारतीय रियल एस्टेट डेवलपर्स संघ (क्रेडाई) के साथ एक समझौता किया है। इस समझौते के तहत, दोनों संस्थाएं मिलकर रियल एस्टेट क्षेत्र में ऊर्जा दक्षता के तौर-तरीकों को व्यापक रूप से अपनाने को बढ़ावा देंगी।

ऊर्जा दक्षता और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए, ईईएसएल ने कई संगठनों के साथ समझौते (MoUs) किए हैं। ये समझौते भारत की G20 और COP28 लिए गए वादों के अनुरूप हैं।

भारत और दुनियाभर में ऊर्जा के बड़े रुझान

10 मिलियन घरों के छत पर सौर पैनल लगाए जाएंगे- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने हाल ही में एक महत्वपूर्ण घोषणा करते हुए बताया कि सरकार "प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना (पीएसवाई)" शुरू कर रही है। इस योजना का लक्ष्य पूरे देश में 1 करोड़ घरों के छत पर सौर ऊर्जा प्रणालियों को लगवाना है। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा, "आज अयोध्या में अभिषेक के शुभ अवसर पर मेरा यह संकल्प और मजबूत हो गया है कि भारत के लोगों के पास अपने घरों की छतों पर अपना सौर ऊर्जा प्रणाली होनी चाहिए। अयोध्या से लौटने के बाद मैंने जो पहला फैसला किया है, वह है हमारी सरकार 'प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना' शुरू करेगी, जिसका लक्ष्य 1 करोड़ घरों की छत पर सौर ऊर्जा स्थापित करना है।"

तेलंगाना सरकार ऊर्जा क्षेत्र को और बेहतर बनाने के लिए "नई विद्युत नीति" लाने वाली है।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री श्री के. रेवंत रेड्डी ने राज्य में एक व्यापक बिजली नीति लागू करने की आवश्यकता पर जोर दिया। यह फैसला मुख्यमंत्री ने विभिन्न राज्यों की मौजूदा बिजली नीतियों के गहन विश्लेषण और राज्य के ऊर्जा विशेषज्ञों से सलाह-मशविरा करने के बाद लिया। मुख्यमंत्री कार्यालय के एक बयान के अनुसार, मुख्यमंत्री रेड्डी ने डॉ बीआर अंबेडकर राज्य सचिवालय में बिजली क्षेत्र की व्यापक समीक्षा के दौरान उपमुख्यमंत्री मल्लू भट्टी विक्रमार्का, मंत्री एन उत्तम कुमार रेड्डी और डी श्रीधर बाबू के साथ अधिकारियों के साथ चर्चा की। चर्चा में बिजली खपत, 24 घंटे निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना, कंपनियों द्वारा बिजली उत्पादन, नई बिजली उत्पादन इकाइयों के लिए उपाय और गृह ज्योति योजना के तहत 200 यूनिट मुफ्त बिजली आपूर्ति जैसे विषय शामिल थे। अधिकारियों ने मुख्यमंत्री रेड्डी को तेलंगाना में बिजली उत्पादन की स्थापित क्षमता, विभिन्न उपयोगिताओं से बिजली खरीद, नियमित बिजली खपत, डिस्कॉम्स के प्रदर्शन और वित्तीय स्थिति के बारे में जानकारी दी।

त्रिपुरा सरकार फरवरी महीने के अंत तक ऊर्जा बचत योजना की घोषणा करेगी

सरकार फरवरी के अंत तक एक ऊर्जा दक्षता योजना लाने वाली है। त्रिपुरा राज्य विद्युत निगम लिमिटेड (टीएसईसीएल) इस योजना को बनाने के लिए ग्रीन टी, डेलॉइट और ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के साथ मिलकर काम कर रहा है। टीएसईसीएल के प्रबंध निदेशक देबाशीष सरकार ने बताया कि "हमारे अनुमान के मुताबिक, 2030 तक त्रिपुरा में बिजली की मांग 100 मेगावाट बढ़ जाएगी। चूंकि राज्य में सिर्फ गैस आधारित बिजली संयंत्र हैं, इसलिए हमें पारंपरिक स्रोतों पर निर्भरता कम करने के लिए ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को तलाशने की जरूरत है।"

भारत अपने 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता लक्ष्य को पूरा करने की ओर तेजी से बढ़ रहा है : आईईए

अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP28) में पिछले महीने वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को 2030 तक तीन गुना बढ़ाने का लक्ष्य रखने वाले देशों के इसे पूरा करने की काफी संभावना है। आईईए ने विशेष रूप से भारत की ओर इशारा करते हुए कहा कि भारत 2030 तक 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म आधारित क्षमता स्थापित करने के अपने लक्ष्य को पूरा करने की उम्मीद है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए भारत 2023-2028 के दौरान 205 गीगावॉट क्षमता बढ़ाने की योजना बना रहा है, जो 2022 की संचयी स्थापित क्षमता को दोगुना कर देगा, जिससे यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा नवीकरणीय ऊर्जा बाजार बन जाएगा। आईईए की रिपोर्ट 'नवीकरणीय ऊर्जा 2023 में' यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार 2025 की शुरुआत में ही नवीकरणीय ऊर्जा वैश्विक स्तर पर बिजली उत्पादन के लिए सबसे बड़ा स्रोत बनकर कोयले को पीछे छोड़ देगी। वहीं 2024 में गैर-स्थिर नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन जलविद्युत उत्पादन को पार कर जाने की संभावना है।

भारत जापान को पीछे छोड़कर तीसरा सबसे बड़ा ऑटो बाजार बन गया है, वर्ष 2047 तक ईवी क्षेत्र में शीर्ष स्थान हासिल करेगा

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा वाहन बाजार बन गया है। इसकी जानकारी केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने गुजरात ग्लोबल समिट 2024 में दी। फिक्की द्वारा आयोजित 'इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण: चार्जिंग अहेड टू 2047' सत्र को संबोधित करते हुए, गडकरी ने 2023 में 2021 की तुलना में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) की बिक्री में 500% की उल्लेखनीय वृद्धि की घोषणा की और 2030 तक 50% की वार्षिक वृद्धि दर का अनुमान लगाया। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की क्षमता पर जोर देते हुए, मंत्री ने ऑटो उद्योग को भारत को ऑटोमोबाइल निर्माण के लिए अग्रणी वैश्विक केंद्र बनाने के लिए इस गति का लाभ उठाने का आग्रह किया। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि निवेश करें, अन्यथा आपसे बस छूट जाएगी।

भारत, संयुक्त अरब अमीरात ने दोनों देशों के बीच संभावित ऊर्जा ग्रिड कनेक्टिविटी के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए

गांधीनगर: भारत और संयुक्त अरब अमीरात ने दोनों देशों के बीच बिजली ग्रिड जोड़ने की संभावना तलाशने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। विदेश सचिव विनय क्वात्रा ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह समझौता नई दिल्ली और अबू धाबी के बीच वर्तमान वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल सम्मेलन में हस्ताक्षर किए गए कुल चार समझौता ज्ञापनों का हिस्सा है। क्वात्रा ने कहा, "दोनों देशों के बीच ग्रिड कनेक्टिविटी की संभावना को लेकर सकारात्मक सोच है।

ENERGY EFFICIENCY SERVICES LIMITED
A JV of PSUs under Ministry of Power, Government of India

पता : एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड(ईईएसएल) 5, 6 एवं 7 तल, कोर -III, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7 - लोदी रोड, नई दिल्ली - 110003

फोन: **011-45801260**

वेबसाइट: **www.eeslindia.org**

संपादकीय और विज्ञापन संबंधी जानाकरी के लिए संपर्क करें-

amishra@eesl.co.in | 011- 45801260